Dr. Sunil Kr. "Suman"
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study Material
B.A. Part-II (H)
Paper-IV
System Psy.
Date:- 28-10-20
Do-Next-class

Neo-Freudian

Contribution of Karen horney

(2) चिन्ता को कम करने के उपाय (Attempt at coping anxiety):- हार्नी का मत था की मूल दुश्चिंता (Basic anxiety) से प्रत्येक व्यक्ति छुटकारा पाने के लिए कुछ उपायों को अपनाता है। ऐसे उपायों को निम्नांकित दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(i) आदर्शवादी आत्म-छवि (Idealized self image):- हार्नी के अनुसार मूल दुश्चिंता को दूर करने के ख्याल से अपने आपके बारे में व्यक्ति एक आदर्शवादी छवि विकसीत कर लेता है जिससे वह अपने आपको ~~बारे में~~ सभी तरह के उत्तम गुणों युक्त मानता है। यह आदर्शवादी छवि प्रायः अवास्तविक एवं अतिरंजित (exaggerated) होता है। ऐसी हालत में वास्तविक आत्मन (Real self) तथा आदर्शवादी आत्मन (Idealized self) में काफी अन्तर होता है। आदर्शवादी आत्मन मांगों को पूरा करने के लिए सामान्यतः एक स्नायुविकृत प्रयास (Neurotic striving) होता है। ऐसा प्रयास बाध्यकर (compulsive), अविभेदी (Indiscriminate) तथा अतुष्टनीय (Insatiable) होता है। अपने आदर्शवादी आत्मन को समर्थन प्रदान करने के लिए व्यक्ति घमंडी हो जाता है जिसमें वह अपने आपमें में कुछ ऐसी विशेष शक्ति जैसे:- बुद्धि, बल, या धन प्राप्त कर लेने की बात सोचलेता है जो अन्य किसी में नहीं होता है।

Ajanta PRODUCTS Oxford

Scanned with CamScanner

(ii) रक्षा प्रक्रम (Defence mechanism) :- हार्नी का मत है की व्यक्ति मूल दुश्चिंता को दूर करने के लिए कुछ रक्षा प्रक्रम (defence mechanism) सहारा लेता है। उनके अनुसार ऐसे रक्षा प्रक्रम दो प्रकार के होते हैं - यौक्तिकिकरण (Rationalization) तथा बाह्यता (externalization) यौक्तिकरण एक ऐसा रक्षा प्रक्रम है जिसमें अयुक्तिसंगत (irrational) अभिप्रेरकों एवं इच्छाओं से उत्पन्न मानसिक संघर्ष या तनाव का समाधान उन अभिप्रेरकों एवं इच्छाओं को युक्तिसंगत बनाकर अर्थात् तर्कपूर्ण एवं विवेकपूर्ण व्याख्या करके किया जाता है और मानसिक संघर्ष को दूर करने की कोशिश की जाती है। इस तरह से हार्नी ने यौक्तिकरण का प्रयोग फ्रायड के ही अर्थ में किया था। बाह्यता को हार्नी ने प्रक्षेपण (projection) को तुल्य माना है जिससे व्यक्ति अपने व्यवहार या क्रिया की व्याख्या कुछ बाह्य कारकों में दोषारोपण या गुणारोपण करके आता है। प्रायः दोषारोपण में वह अपने से कमजोर तत्वों को ही निशाना बनाता है।

स्पष्ट हुआ की हार्नी सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों पर बल डालकर यह दिखलाने की कोशिश किये हैं कि मानव व्यवहार न केवल जैविक एवं मूलप्रवृत्तिक कारकों से ही निर्धारित होता है बल्कि पर्यावरणी कारकों से ही प्रभावित होता है। इस तरह से केलमैन (Kelman, 1971) के अनुसार हार्नी का दृष्टिकोण मूलप्रवृत्तिक (instinctual) न होकर सम्पूर्णतावादी (holistic) था। उन्होंने यह स्पष्ट किया की बच्चा पर्यावरण तथा आनुवंशिकता (heredity) का प्रतिफल (product) होता है। उन्होंने फ्रायड द्वारा यौन कारकों (sexual factors) पर बल (emphasis) को अनुचित कहा।

End.

Scanned with CamScanner